मछली व्यापार पर जीने वाले कामगर

यह कैसा विकास?

आज ज्यादातर लोगों के लिए जी पाना ही एक बड़ी लड़ाई है। कई क्षेत्रों में विकास के नाम पर ऐसे बदलाव आए हैं कि लोगों के लिए जी पाना और मुश्किल हो गया है।

हमारे पुराने काम धंधे साधारण औज़ारों से होते थे। उनसे उत्पादन कम था लेकिन वे प्रकृति के साथ दोस्ती बना कर रखते थे। आज विकास का मतलब समझ लिया है ज्यादा उत्पादन। इस कारण जगह-जगह मशीनों और रसायनों का इस्तेमाल बढ़ा है। इन चीज़ों ने उत्पादन तो बढ़ाया है लेकिन प्रकृति को नुकसान पहुंचाया है। आम छोटे कामगरों का धंधा चौपट कर दिया है। फ़ायदा हुआ है तो बड़े पूंजीपतियों का जिनके पास मशीनें लगाने का पैसा है।

विकास का मतलब ग़रीब को और ज्यादा ग़रीब तथा अमीर को और ज्यादा अमीर बनाना तो नहीं है ना? फिर ऐसा क्यों?

मछली व्यापार

मछली पकड़ने, साफ़ करने, सुखाने, बेचने का धंधा बहुत पुराना है। न सिर्फ़ समुद्र तट पर रहने वाले लोग इसमें लगे हैं बल्कि लाखों लोग तालाबों, नदियों और नालों से भी मछली पकड़ते हैं। अंधाधुंध मशीनीकरण का असर इस धंधे पर भी पड़ा है। अब छोटे, लकड़ी की नाव वाले या किनारों पर जाल डालने वाले मछली कामगरों के लिए जीना, पेट भरना भी मुश्किल हो गया है।

विदेशों में मछली की बढ़ती मांग को देख कर बड़े-बड़े उद्योगपति इस धंधे में आ गए हैं। साथ लाए हैं इंजन से चलने वाली ताक़तवर नावें, बेहतर जाल और कभी-कभी बारूद भी।

उन्होंने समुद्र की छाती चीर कर रख दी है। मछलियां ही नहीं, उनके अंडे बच्चे, अन्य समुद्री जीव भी नष्ट हो रहे हैं। समुद्री दुनिया तो तहस-नहस हो ही रही है, रोज़ मछली पकड़ने और बेचने वाले मछुआरे और मछुआरिनों की रोजी-रोटी छिन गई है। ज़ाहिर है भूखे मर रहे लोग विरोध करेंगे।

केरल स्वतंत्र मछली कामगर फेडरेशन

सन् 1981 से यह संस्था लगातार बढ़ते मशीनीकरण और समुद्री पर्यावरण के विनाश के खिलाफ़ संघर्ष कर रही है। केरल में बड़े समुद्री तट के अलावा बहुत लम्बे जल मार्ग हैं जो ज़मीनी इलाके के भीतर तक फैले हुए हैं। यहां बहुत बड़ी संख्या में लोगों की जीविका मछली पर निर्भर करती है। यहां फैडरेशन लगातार आंदोलन, भूख-

हड़ताल, बंद व प्रदर्शनों के ज़रिए सरकार पर दबाव डालने की कोशिश कर रही है। इस आंदोलन में मर्द व औरतें बराबर भाग ले रहे हैं।

औरत मछली कामगर

सदियों से मर्द व औरतें इस धंधे में बराबर के भागीदार रहे हैं। मर्द अगर नावों में बैठ कर समुद्र में मछली पकड़ने जाते थे तो औरतें पकड़ी हुई मछली को साफ़ करने और बेचने का काम करती थीं। वे मछली साफ़ करके डिब्बा बंद करने वाली फैक्ट्रियों में भी काम करती हैं। औरतों की कमाई घर की आमदनी का करीब 30 फी सदी होती है।

मछली उद्योग पर पड़ने वाले बुरे असर का ज्यादा बुरा असर औरतों पर पड़ा है। क्योंकि एक तो वे ग़रीब है, दूसरे औरत हैं। अब उन्हें बेचने के लिए मछली अपने समुद्र तट पर नहीं मिलती। या तो उन्हें दूर जाना पड़ता है या फिर थोक बाज़ार से खरीदना पड़ता है। इसलिए मुनाफ़ा कम हो गया है।

जो औरतें फ़ैक्ट्रियों में काम करती हैं वहां भी उनका शोषण होता है। सुबह आठ बजे से रात के आठ बजे तक कमरतोड़ मेहनत करती हैं। दोपहर में खाने के लिए सिर्फ़ एक घंटे की छुट्टी मिलती है। कभी-कभी रात भर काम करना पड़ता

है। जब भी माल आता है तभी काम पर बूला लिया जाता है। इस सबके बाद न नौकरी की कोई सुरक्षा है, न ही पूरी मज़दूरी। इसके अलावा घरों में उनके हाथ में कोई ताक़त नहीं है। परिवारों में लड़कियों की मृत्यु दर अधिक है। घर और बाहर दोहरी मेहनत करने के बावजूद इनके पास कोई निर्णय लेने की शक्ति नहीं है।

चेतना

अब कई महिला संगठन इन औरत मछली कामगरों की समस्याओं को उठा रहे हैं। उनके पारिवारिक और कार्य जीवन में मर्दों की सत्ता को चुनौती दे रहे हैं।

फैडरेशन के स्तर पर तीन मुद्दे उठाए गए हैं—

1. फैडरेशन के पुरुष सदस्यों का अपनी पत्नियों के साथ व्यवहार।
2. शराबखोरी और उससे जुड़ी समस्याएं
3. फ़ैसले लेने की प्रक्रिया में औरतों की भागीदारी।

महिला संगठनों की मदद से कई मार-पीट, बलात्कार और हत्या के मामलों में अपराधियों को सज़ा मिली है। इस संघर्ष में मछुआरिनों की लड़ाई दो तरफ़ा है। एक तो मछुआरिन होने के नाते पेट भरने की लड़ाई, दूसरी तरफ़ औरत के नाते इज्ज़त पाने की लड़ाई। □